International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 581-582

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 581-582
www.allresearchjournal.com
Received: 23-11-2017
Accepted: 30-12-2017

डॉ. अरविन्द मैन्दोला
सहायक शिक्षिका, उत्क्रमित मध्यविद्यालय, कंचनपुर, बिधुपुर, वैशाली, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अरविन्द मैन्दोला
सहायक शिक्षिका, उत्क्रमित मध्यविद्यालय, कंचनपुर, बिधुपुर, वैशाली, बिहार, भारत

कलाकृति का सृजन रूप

डॉ. अरविन्द मैन्दोला

सारांशः
प्रत्येक कलाकृति कुछ ना कुछ सामाजिक मूल्यों का निर्धारण करती है। इन्ही मूल्यों के कारण हम उस कलाकृति का मूल्य निर्धारण करते है। प्रत्येक कलाकृति की एक सोच प्रक्रिया होती है जो समाज के सम्मूख प्रस्तुत होती है। किसी भी कलाकृति की उत्कृष्टता और सार्थकता के आधार पर उसका मूल्य निर्धारण किया जाता है। कलाकृति कलाकार की कल्पनाशीलता और सौन्दर्यबोध हमारी संवेदनाों को परिष्कृत करती है। समय के साथ रचनाओं के स्तर पर कला के मूल्य भी बदलते रहते हैं। इसी तरह कलाकृति के साथ कुछ नया जुड़ने के कारण नवीनीकरण की संभावनायें निरन्तर बनी रहती है।

मूल शब्दः– अनुभूति, उत्कृष्टता, सार्थकता, परिष्कृत, समालोचना, अर्न्तवस्तु मूल्य–प्रतिष्ठा, भावाभिव्यक्ति, मूल्यदृष्टि, अनुकरणीय, प्रतिकृतियाँ, वस्तुशिल्पीय

प्रस्तावनाः
कोई भी कलाकृति कुछ ना कुछ नवीन मुल्यों की रचना करती है। इसी मुल्य रचना का फल है कि हम कलाकृतियो को मूल्यवान मानते रहे है और समाज उन्हें संरक्षित करने की बात भी करते है, इससे हम मन की अनुभूति और सुख पाते है। इसलिए हम चित्र, संगीत, नाटक, नृत्य और शान्ति के वातावरण मे कुछ सुनना–बुनना चाहते है। अतः हमारा समाज विभिन्न प्रकार के नाटकगृह, सिनेमाघर, रंग–मंच, सभागार, कला–दीर्घा आदि के निर्माण से कलात्मक वातावरण को प्रस्तुत कर शान्ति और सुखद वातावरण का निर्माण करता है।
प्रत्येक कलाकृति के पीछे कलाकार की अपनी सोंच एवं कहानी होती है, जो समाज के सम्मुख प्रस्तुत होती है। इसी तरह कलाकार समाज के सम्मुख कुछ मुल्य एवं स्वयं की विचारधारा को प्रस्तुत करता है और यह विचार एक अर्थ को भी प्राप्त होता है। किसी भी कलाकृति की उत्कृष्टता और सार्थकता के आधार पर उसका मूल्य निर्धारण किया जाता है, साथ ही कलाकृति हमें किस तरह एवं कितना? आत्मिक आनन्द या तृप्ति प्रदान करती है। कलाकृति हमारी कल्पनाशक्ति, अन्तःचेतना और सौन्दर्यबोध को प्रभावित करती हुयी परिष्कृत भी करती है। इन सभी संवेदनाओं को हम अनेक विधियों से प्राप्त करते है। निश्चिय ही उन्हें जांच–परख कर निर्णय करते है। कला–मूल्यों को परखने के लिये समीक्षा, चर्चा, सवांद, आलोचना, विचार–विमर्श, वाद–विवाद जैसे पैमाने भी समान्तर विकसित होते रहते है। इसीलिए कलाओं के संसार में इनका विशेष महत्व है। कलाओं के क्षेत्र में कुछ नवीन आविष्कार कुछ नयी सोंच के साथ ही नवीन समीक्षा भी उपस्थित हो उठती है। इसीलिये आलोचना और विमर्श की पद्धतियाँ भी समय के साथ नवीनता के साथ नये कलेवर में परिवर्तित होती रहती है। अतः यह स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि रचना के स्तर पर कला के मूल्य बदलते रहे है और समय के साथ इसमें कुछ नयापन होता रहता है। इसी तरह प्रत्येक नयी कलाकृति के साथ नया जुड़ना, प्रत्येक माध्यम की कुछ ऐसी कलाकृतियों के कारण होता है, जो कथन और विचार के स्तर पर उपस्थित कुछ नही था। इसे कथा माध्यमों की शक्ति भी मानते है कि इसमें अपने नवीनीकरण की सम्भावनायें बराबर मौजुद रहती है।
कलाकार जब विचार के स्तर पर कुछ नया सोंचता है या उसकी कला कुछ नयी सोंच की क्षमता रखती है तो इसमें अन्तवस्तु और शिल्प–विधियाँ दोनों ही शामिल होती है, जिसमें शैली, विधियाँ, क्षमता, पूर्व अनुभव और कुछ नवीन सोच आदि भी एक नये विचार भी सम्मलित हो सकते है।
नवीन अर्न्तवस्तु किसी भी कलाकृति में नवीन विचार के साथ भरती है। प्रत्येक कलाकार ने अपने समय में प्रत्येक विषय–वस्तु को ही अपने ही निजी दृष्टिकोण से देखा और कला निर्मित की है। इसीलिये प्रत्येक काल की कला भिन्नता रखती है। कला के इतिहास से ऐसे उदाहरण लिये जा सकते है, जिससे हम कह सकते है कि प्रत्येक कलाकार अपने नये विचारों के साथ आये और उसी के अनुरूप अपनी कलाकृतियों को आकार और संयोजनों में नवीन सृजन करते रहे है। इसी विचार को हम इस तरह से कह सकते है कि हम किसी कलाकृति में निरन्तर विचार को देखते रहते है,

चाहे वो किसी भी समय का क्यों ना हो और उसी के आधार पर कलाकृति का मूल्य निर्धारण करते है। विचार ही किसी भी कलाकृति की मूल्य–प्रतिष्ठा करता है। कला की रचना में एकाग्रता, कुशलता, भावाभिव्यक्ति, मानवीय संदेश, ईमानदारी, सौन्दर्य दृष्टि आदि सभी इसके मूल्य के निर्धारण में सहयोग करते है और ये सभी उसकी रचनाशीलता के अनिवार्य तत्व भी होते है ये सभी तत्व जिस अनुपात में किसी कलाकृति में उपलब्ध होगें उतनी ही वह कृति मूल्यवान होती जाती है और मूल्यदृष्टि के लिये सराही जाती है। फिल्मों में कई ऐसे उदाहरण हमारे सामने है जिसमें नयी सोच, पटकथा, छांयाकन, संदेश आदि में नवीन विचार–दृष्टि हम खोजते और पाते है। इसीलिए मनुष्य–समाज में उन्हीं कृतियों को पुनः समाज के सामने लाता है जो प्रत्येक दौर में समाज को कुछ नये अर्थ और नये मूल्य देती रही है।

गगेन्द्रनाथ, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अमृतशेर गिल, ब्रेन्दे, का कलाकर्म अपनी ओर बार–बार आकर्षित करते है। क्योंकि उनकी कलाकृतियों में निहित रचना–विचार, मूल्यों के भण्डार की तरह है उनकी कलाकृतियों में निःशेष नही होता अनन्त सौन्दर्य निरन्तर झरता रहता है। नित नयी दृष्टि के साथ हमें देखने के लिये प्रेरित करते रहते है।

वास्तु शिल्पों के बेजोड़ नमूने जैसे फतेहपुर सीकरी, ताजमहल, जयपुर, चित्तोड़, बीकानेर, कोर्णाक आदि के उत्कृष्ट वास्तुशिल्प आज भी हमें आश्चर्यचकित करते है। इनके वस्तुशिल्पीय सिद्धान्त आज भी अनुकरणीय है, इनके अद्भुद नमूनों से तत्कालीन संस्कृति–सभ्यता, वैभव मूल्यों को परखा जा सकता है। वास्तुक्षेत्र में ही नहीं प्रायः सभी क्षेत्रों में हम देख सकते है कि समकालीन ने प्राचीनता से सौन्दर्य दृष्टि के रूप में तो कही रचना–प्रकिृया या रूप से प्रेरणा पाकर नयापन पाया है।

आजादी के पूर्व में राजे–रजवाड़ों के यहाँ कलाकृतियाँ निजी सग्रंहालयों में बन्द थी । समय के साथ संग्रहालयों के माध्यम से समाज के सामने आयी फिर कलाकृतियों की प्रतिकृतियाँ भी समाज को सुलभ हुयी। कला–पुस्तकों, पत्रिकाओं में भी कलाकृतियाँ छपने लगी, उन पर चर्चा, समीक्षा, विचार–विमर्श भी होने लगे है। एक लोकतात्रिंक माहौल में कला की परख–आलोचना आदि भी एक नये तरीके से संभव हुयी कि कला–कृतियों की मूल्यदृष्टि को परखने की भी एक नयी भूमीका बन सके।

विधियों–प्रविधियों को काम में लेने के क्रम में भी नयी संभावनायें बनती है और ये विधियाँ स्वयं एक मूल्य की तरह पारम्परिक रचना–सामग्रीयों का संसार बहुत व्यापक हुआ है उसमें कागच, रेंत, धागें, तार, प्लास्टिक आदि अनेक वस्तुयें शामिल हो गयी है। ये मौलिक कल्पनाशीलता कलाकारों की अपनी निजी सोंच का परिणाम ही है। इसी तरह के प्रयोग हम कला प्रदर्शनियों मे देख सकते हैं।

समकालीन कला में भारी फेर–बदल हुआ है। विचारों और मूल्यों के स्तर पर अनगिनत चीजें सम्मिलित है। हर कलाकृति को नयी संम्भावना के साथ नये मूल्य की तरह देखने का प्रंसग इसी शताब्दी में बना है। वैयक्तिक सन्दर्भो को मान्यता मिल रही है। क्योंकि अन्ततः प्रत्येक चीज की परख समाजों, संस्कृतियों और मानवीय मूल्यों की तरह ही होती है और समाज–शास्त्रीय कसोटियां भी अपना काम करना बन्द करती है। जब हम हर कृति को नये विचार और मूल्य के रूप में देखना स्वीकार करते है और हर कलाकृति को उसके अपने निजी विशिष्ठ सन्दर्भों में देखना स्वीकार करते है, मानवीय अनुभवों के विविध इलाकों की व्यापकता को भी स्वीकार करते है।

आधुनिक दौर में प्रत्येक कलाकृति एक नयी सम्भावना के साथ बनी हुयी है उसमें कई स्तरों पर नये विचारों की श्रृंखला बनी दिखाई देती है।

सन्दर्भः–

1. आसित कुमार हाल्दर, ललित कला धारा
2. मनोहर लाल, कला का अध्ययन
3. डा. मुल्क राज आनन्द, द हिन्दू व्यू ऑफ आर्ट
4. रामचन्द्र शुक्ल, कला का दर्शन, करोना आर्ट पब्लिशर्स, मेरठ
5. आनन्द मुखर्जी, द हिन्दु व्यू ऑफ आर्ट, लन्दन, 1993